शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2013

शमशेर की कविताओं की भाषिक–संघटना एवं व्याकरणिक आयाम

अरविन्द कुमार यादव
द्वारा रामशरण यादव, भारत कला भवन,
काशी हिन्दू विश्वद्यिालय,वाराणसी–221005

शोध संक्षेप

शमशेर एक महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। साधारण पाठक के लिए इनकी भाषा क्लिष्ट चाहे न हो पर सर्वथा नई और विलक्षण प्रतीत होती है। यह नवीनता और विलक्षणता, उसमें इसीलिए पैदा होती है क्योंकि शमशेर बोली के एक प्रयोगशील कवि हैं। उनकी कविताओं में प्रयुक्त बोलियां भाषा को मार्मिक, सार्थक और प्रभावोदक बनाकर भाव सम्प्रेषणीयता की अर्थयुक्त अभिव्यक्ति देती हैं। इनकी कविताओं में खड़ी बोली और भोजपुरी के ही पुट मिलते हैं, जैसे कि निराला और मुक्तिबोध की कविताओं में मिलते हैं। इसके इतर शमशेर की कविताओं में अन्य बोलियों का कदाचित् रूप दिखलाई पड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र में शमशेर की कविताओं की भाषिक संघटना और व्याकरणिक आयाम पर विचार किया गया है।

भूमिका

शमशेर की कविताओं में अनेक बोलियों का प्रयोग मिलता है जिसमें खड़ी बोली, ब्रजभाषा, अवधी के अतिरिक्त भोजीपुरी बोली आती है। इन्होंने भाषा को एक नया आयाम देने के लिए रूप–व्यवस्था का विधान किया है। जो भाषा को व्याकरण के समीप ला देता है। जिसके कारण भाषा में सौन्दर्य आ गया है। इनकी भाषा का अध्ययन करने से पता चलता है कि इनकी भाषा रघुवीर सहाय की तरह अव्यय, प्रत्यय, उपसर्ग, और परसर्ग से मंडित है, लेकिन इनकी भाषा अभिव्यक्ति देने में समर्थ है। इन्होंने 'परसर्ग' को अपने समकालीन कवियों से ग्रहण किया है। परसर्गों के द्वारा संज्ञा अथवा सर्वनाम के रूप में बदलाव ला दिया है, जिसका आधार कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान संबंध, अधिकरण और संबोधन परसर्ग है। इनके काव्य में विभिन्न भाषा–बोली के शब्द प्रयुक्त हुए हैं, जो सुग्राह्य हैं। उनके शब्द–विधान को हम ने चार वर्णों में विभाजित किया है–उर्दू–अरबी–फारसी शब्द, विजातीय–शब्द, तत्सम–शब्द और तद्भव–शब्द। छायावादोत्तर कवियों की तरह ये कवि प्रयोगवाद से अछूते नहीं हैं। जिस प्रकार प्रयोगवादी कवियों ने भाषिक–सौष्ठव के लिए प्रतीक, बिम्ब, मिथक और उपमान आदि का प्रयोग किया है, उसी प्रकार इन्होंने भाषा–निर्माण में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया–विशेषण, प्रतीक, बिम्ब, मिथक, अप्रस्तुत–विधान, ध्वनि, छन्द के साथ–साथ ही समास का भी प्रयोग किया है। इनकी भाषा–सौष्ठव में निहित समास के अन्तर्गत अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुब्रीहि, द्वन्द्व के साथ–साथ कर्मधारय और द्विगु भी निहित हैं।

शमशेर की भाषा

शमशेर एक ऐसे विशिष्ट कवि हैं कि वे हिन्दी–उर्दू के बीच विवेक नहीं करते हैं। दोनों ही खड़ीबोली के रूप हैं। वे यह भी कहते हैं कि हिन्दी के कवि और लेखकों को उर्दू के उस्ताद शायरों जैसे 'दाग़' वगैरह के भाषा–बोली प्रयोगों से बहुत कुछ सीखना चाहिए। शमशेर इस मान्यता का प्रयोग भाषा

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2013

के साथ बोली के निर्माण में भी करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वह कभी–कभी एक नये प्रकार की मिश्रित खड़ी बोली जैसे लगने लगती है। जिसमें हिन्दी के साथ –साथ उर्दू के अप्रचलित शब्दों का प्रयोग मिलता है। शमशेर की कुछ श्रेष्ठ कविताओं में भी इस प्रकार की बोली मिलती है। 'टूटी हुई बिखरी हुई' अथवा 'एक नीला दरिया बरस रहा' इसके उहारण हैं। इन कविताओं को पढ़कर यह प्रतीत होता है कि शमशेर की कविता की भाषा के लिए बोली मूल्यांकन के लिए जो परम्परागत मानदण्ड हैं वे काफी नहीं है। खड़ी बोली के लिए शमशेर जब खड़ी बोली के प्रति व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हैं तो केवल शब्द ही नहीं लेते बल्कि सांस्कृतिक स्रोतों का भी इस्तेमाल करते हैं जैसे कि 'निराला' 'मुक्तिबोध' और 'अज्ञेय' ने किया है कि–

''जनता के बल का महाप्राण/शक्तिस्फुलिंग/
जो मध्य–युगों का परित्राण कर छूटेगा/बन
नव–युग जलता प्रमाण।''[1]

यहां 'महाप्राण', 'परित्राण' और 'प्रमाण' खड़ी बोली के शब्द हैं जो संस्कृत से ग्रहण किये गये हैं। शमशेर प्रयोगधर्मी कवि है। इन्होंने भाषा के निर्माण में भाव–सम्प्रेषण को और सार्थक बनाने के लिए ब्रजभाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। इनकी कविताओं में ब्रजभाषा के शब्द कदाचित् दिखाई पड़ते हैं, प्रायः 'औकारान्त' शब्दों के साथ भूतकालिक सहायक क्रिया के लिए 'हो' 'ही' 'हे' शब्द का प्रयोग मिलता है। इतना ही नहीं भविष्यकालिक क्रियाओं में 'ग' वाले रूप भी यदा–कदा दिखलाई पड़ जाते हैं– जैसे–

''लड़ना ही हमें /फिर जीत हो या हार।''[2]

इसी प्रकार

''नेता माउंटबैटन ही रहे! /काबा–काशी लन्दन ही सही।''[3]

इन दोनों उदाहरणों के अन्तर्गत प्रथम उदाहरण में 'ही' 'हो' तथा द्वितीय उदाहरण में भी 'ही' और 'रहे' शब्द ब्रजभाषा की भूतकालिक क्रिया बनाने में प्रयुक्त होते हैं। शमशेर इन शब्दों का प्रयोग करके भाषा की गम्भीरता और भाव–सम्प्रेषणीयता को मार्मिक और प्रभावबोधक बना देते हैं।

शमशेर ने तुलसीदास की परम्परागत बोली को अपनी कविताओं में कहीं–न–कहीं प्रयुक्त किया है। अवधी बोली में प्रयुक्त शब्द भाषा को एक नवीन ताजगी प्रदान करते हैं। शमशेर की कविता में 'इया' और 'वा' प्रत्यय के साथ–साथ ध्वनि–परिवर्तन के कुछ शब्द मिल जाते हैं जो कि भाषा को गढ़ने में अपनी अहम् भूमिका निभाते हैं। जैसा कि 'अज्ञेय' और शिवपूजन सहाय भाषा को एक नवीन सांचे में ढ़ालते हैं, उसी तरह शमशेर भी । शमशेर अपनी अवधी बोली के कुछ क्रिया–विशेषण प्रयोग करते हैं। 'हियां' 'इहवां' 'ओठिया' 'केठिया' खामोशियां' आदि। शमशेर ने ध्वनि–परिवर्तन युक्त शब्द का भी प्रयोग अपनी भाषा में किया है। निम्न पंक्ति के शब्द ध्वनि–परिवर्तन को पुष्ट करती है।

''जो भविष्य में प्राचीन''[4]

इस उद्धरण में 'प्राचीन' शब्द में 'न' के स्थान इतर बोली जैसे ब्रजभाषा में 'ण' हो जाता हैं अवधी में 'न' रहता है।

शमशेर, 'अज्ञेय' और मुक्तिबोध की श्रेणी में आते हैं, तो वे प्रयोगधार्मिता से कैसे दूर हैं? इन्होंने भाषा को नवीन रूप प्रदान करने के लिए बोलियों को अपनी कविता में प्रयुक्त किया है, जिससे भाषा में सुड़ौलता और सुकुमारता आ गयी है। जो भाव–सम्प्रेषणीयता को अभिव्यक्ति देने में अर्थवान सिद्ध होता है। शमशेर ने **भोजपुरी** बोली शब्दों का प्रयोग

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2013

करके अपनी कविता को अधिक सरस और प्रांजल बना दिया है। इनकी कविता में भोजपुरी से निर्मित क्रिया–विशेषण, भूतकालिक क्रिया, भविष्यकालिक–क्रिया और ध्वनि–परिवर्तन से युक्त शब्द का प्रयोग हुआ है। जो कि भाषा के रचाव, गढ़न में चुस्ती और कसाव लाता है। भोजपुरी बोली का यह उद्धरण प्रस्तुत है–

''निंदिया सतावे मोहें संझही से सजनी।/प्रेम–बतकही तनक हूं न भावे/संझही से सजनी। निंदिया सतावे मोहें/छलिया रैन/कजर ढरकावे/संझही से सजनी/निंदिया सतावे मोहें। दुअि नैना मोहैं/झुलना झुलावें/संझही से सजनी।/निंदिया सतावे मोहें।''[5]

शमशेर ने खांटी, देहाती शब्दों को अपनी रचना–प्रक्रिया के लिए ग्रहण किया है। जो कि ग्रामीण सांस्कृतिक से लैस है। जिसमें दाम्पत्य जीवन की मनोरम अभिव्यक्ति हुई है। शमशेर ने पारिवारिक चित्रों को ग्रामीण परिवेश से उठाया है। जिसमें 'बैलेड' है। ताजापन है। शमशेर ने इस उद्धरण में 'पत्नी' के स्थान पर 'सजनी', 'शाम' के स्थान पर 'संझही', 'कष्ट' के स्थान पर 'सतावे' निद्रा के स्थान 'निदिया' शब्द का अनूठा प्रयोग किया है, जिसमें भाषा का ताजगीपन है। इतना ही नहीं 'अभिव्यक्ति' के स्थान पर 'बतकही' शब्द का प्रयोग करके भाव–सम्प्रेषणीयता को और मार्मिक बना दिया है। 'बतकही' शब्द 'क्रिया' के लिए प्रयोग किया गया है। 'छलिया' शब्द यहां पर 'कर्ता' का द्योतक है, जो कि भाषा में संज्ञा का कार्य करता है। शमशेर ने भोजपुरी के संख्यावाचक प्रत्यय का भी प्रयोग किया है। 'दो' के स्थान पर दुअि' का प्रयोग किया है 'झुलावे' वर्तमान कालिक क्रिया का परिचायक है जिससे भाषा कोमल हो गयी है।

शमशेर की भाषा संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया–विशेषण के साथ ही अव्यय से युक्त है। जो भाषा को मार्मिक, मनोरंजक और प्रभावोदक बनाता है। इनकी कविताओं में अव्यय का अनूठा रूप देखने को मिलता है। जो, जैसे, इसे, जिसे, कोई, मगर, तो, जो, उसे, जब, तब, कहां, क्यों, क्या, कब, कैसे, कि, था, से, ने, पर, के, बार–बार, में, या, की, का, है, ही, हे, औ, तरह, लेकिन, किन्तु, अगर शब्दों की प्रयुक्ति हुई है। उन्होंने अपनी रचनाओं में विशेषण, क्रिया–विशेषण, कारकों तथा भाषिक–रूप का बड़ी सावधानी से इस्तेमाल किया है। रूप–व्यवस्था का अध्ययन करने पर पता चलता है कि शमशेर की भाषिक–संघटना में प्रत्यय विधान का अनूठा प्रयोग हुआ है, जो भाषा में सौन्दर्य को निराखने का काम करता है। शमशेर की भाषा में हिन्दी के दोनों प्रत्ययों का रूप दृष्टगोचर होता है– जो कृदन्त और तद्धित हैं।

शमशेर की कविताओं में कृदन्त–प्रत्यय है जो क्रिया के अन्त में जुड़कर भाषा को एक नया रूप प्रदान करते हैं। भाषिक–संघटना को भी एक नया आयाम देते हैं। शमशेर की कविताओं में भाववाचक, कर्मवाचक और करणावचक तीनों प्रत्यय मिलते हैं। भाववाचक प्रत्यय धातु के अन्त में जुड़कर भाव–सम्प्रेषणीयता को सशक्त बनाते हैं, जो आ, आई, आन, आप, ती, न्ती, वट, और हट से बने हैं। शमशेर की कविताओं में भाववाचक–प्रत्यय पर्याप्त मात्र में मिलते हैं, जो 'काश्मीर' 'धूप' 'बात बोलेगी' कविताओं में देखा जा सकता है। भाववाचक–प्रत्यय के उदाहरण दृष्टव्य हैं– झिलमिलाहट' 'सरसराहट, 'आरती', 'उभरती', 'पुकारती,' 'उतारती' आदि। इसके अलावा इनके काव्य में 'कर्मवाचक और 'करणवाचक' प्रत्यय कहीं न कहीं दिखलाई पड़ते है। करण–वाचक प्रत्यय के संकेत इनकी कविताओं में देखने को मिलता है जो 'आ,' 'ई', 'ना' 'न' आदि से युक्त होकर निर्मित हुए हैं। इसका प्रमाण

इनकी कविता 'काश्मीर', ' आकाशे दामामा बाजे' में दिखाई पड़ता है। इसके उदाहरण हैं–'बन्दी', 'प्रतिक्रियावादी' 'बुनियादी', 'लड़ना', दमन आदि। इन उदाहरणों में 'बन्दी का बन्द+ई, प्रतिक्रियावादी का प्रतिक्रियावाद+ई, बुनियादी का बुनियाद +ई, लड़ना का लड़+ना और दमन का दम+न आदि, करणवाचक के प्रत्यय के मार्मिक दृष्टांत हैं।

तथ्यतः समकालीन कवियों ने जिस तरह भाषा को सौन्दर्य प्रदान करने के लिए प्रत्ययों के दोनों रूपों का वर्णन किया है ऐसा ही प्रयोग शमशेर ने अपनी भाषा को गढ़ने में किया है। कृदन्त प्रत्ययों में जहां में भाववाचक, कर्मवाचक और करणवाचक प्रत्यय हैं, वहीं तद्धित प्रत्ययों में भाववाचक, कर्मवाचक, करणवाचक के इतर गुणवाचक और स्थानवाचक प्रत्यय हैं। यह मार्मिक, सार्थक, तीव्रतर और ताजेपन से युक्त है। शमशेर की कविताओं में तद्धित–प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, और विशेषण से युक्त होकर अपनी अर्थवान अभिव्यक्ति देते हैं। भाषा को प्रांजल, परिमार्जित और परिष्कृत करते हैं। तद्धित–प्रत्यय के दृष्टांत शमशेर की कविताओं में पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। इसकी पुष्टि 'प्रेम की पाती' और 'भारत मां की आरती' कविता से होती है। तद्धित प्रत्यय के उदाहरण ये हैं–'भयविहीन', 'समितियां', 'खोखली', 'प्रहरी', 'प्रवीन' आदि। इन उद्धरणों से भयविहीन का–भय+विह+इन समितियां के समित+इयॉ, खोखली का खोखल+ई। ये शब्द संज्ञा के हैं इनको तद्धित प्रत्यय बनाने के लिए 'ई' 'इन' इयां प्रत्यय लगाना पड़ा। प्रवीन का 'प्रव+इन' होता है। जो संज्ञा और विशेषण दोनों का द्योतक हैं इसमें भी 'इन' प्रत्यय लगाकर प्रवीन बनाया गया है।

शमशेर ने अपने काव्य को प्रणित करने के लिए संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली के शब्दों से निर्मित 'तत्सम उपसगो' का उपयोग किया है जो इस प्रकार दृष्टव्य है–प्रत्येक, प्रतिनिधि, आहूत, अनुसंधान, प्रतिरोध, स्वप्न, अभिनव, अभिव्यक्ति, उत्पत्ति, आलोक, उन्माद, अनोन्मादी, आसमान, प्रकाश, इन्सान, अनुतप्त आदि हैं। उदाहरणार्थ–

1. ''अखिल उत्पादन के अमर अधिकारी विश्व राष्ट्रों के संग साभिमान''[6]
2. ''आज परिषद् के हृदय पर महाराजाओं के दमन की स्वातन्त्र्य के अधिकार का अपहरण।''[7]

प्रस्तुत दोनों दृष्टांत में 'उत्पादन' 'अधिकारी' अधिकार' और 'अपहरण' ये तत्सम उपसर्ग हैं। शमशेर ने 'तत्सम उपसर्ग के अलावा 'तद्भव उपसर्ग' का भी प्रयोग किया है। जिसमें संस्कृतनिष्ठ शब्द के बिगड़े हुए शब्द हैं, जो काव्य की अर्थवत्ता एवं सार्थकत्ता को बनाये रखे हैं, जो इस प्रकार दृश्यांकित होते हैं–अचल, दुस्तवार, परतीति, निस्तार, पराधीन, निरन्तर, निगाह, अमित, असहनीय, अक्षर, अधर, अमरीत, करबट, अटल, सावन, परिधि, औरत, दुःख, दुबारा, कुहाड आदि। इस का यह उदाहरण है–

''पराधनी मानव है जग में नौजवान मरते हैं जब तक! छीन अमरता का धन यम से।''[8]

इस उदाहरण में 'पराधीन का 'पर' और 'अमरता' का 'अ' तद्भव प्रत्यय के जीवन्त प्रमाण हैं।

शमशेर ने अपने काव्य में 'विजाती' उपसर्ग का प्रयोग, 'अज्ञेय', मुक्तिबोध, नागार्जुन, सक्सेना, त्रिलोचनशास्त्री, धूमिल के साम्य ही प्रयोग किया है कि जो उर्दू, अरबी–फारसी शब्दों के द्वारा निर्मित हैं–बेठोस, बेख़बर, बेहूदगी, ख़्याल बाख़बर, बकाया आदि। जैसे–

''अन्दाज़ा ही बहक़ न गया या निशां के पार थी सैद की निग़ाह भी तीरा–कमाँ के पार!''[9]

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2013

इस उदाहरण में 'बहक़' और 'निग़ाह' शब्द के साथ 'बहक़' में 'ब' और 'निग़ाह' में 'नि' उपसर्ग है।

शमशेर ने **'परसर्ग'** कर्ता परसर्ग में दो तरह का प्रयोग किया है। जिसमें 'ने' के होने अथवा 'ने' नहीं होने पर भी कर्ता परसर्ग का पता चल जाता है। अवधी और बिहारी बोलियों में 'ने' परसर्ग का प्रयोग नहीं होता है। कर्ता परसर्ग के प्रयोग के समय लिंग, वचन व क्रिया का ध्यान रखना होता है। जो इनकी कविताओं में पर्याप्त मात्रा में है–

''एडीटरी जनता ने/सिखायी है कि तन्ख़ाह ने?
लेता है मेहनताने/ये मुख़्तार है''[10]

प्रस्तुत पंक्तियों में कर्ता 'एडीटरी जनता' है, क्रिया 'सिखायी' और वचन 'बहुवचन' है। यहां एक 'एडीटरी जनता' की बात नहीं कही गयी है बल्कि सम्पूर्ण 'एडीटरी जनता' की बात कही गयी है।

शमशेर की कविताओं में 'कर्म–परसर्ग' का अत्यान्तिक सूक्ष्म ढ़ग से प्रयोग हुआ है। इनकी कविताओं में प्रत्यय और अप्रत्यय दोनों के बिना कर्म–कारक परसर्ग का प्रयोग मिलता है। कर्म–परसर्ग' का चिह्न 'को' है जो शमशेर की कविताओं में दृष्टित होता है–

''नेताओं, आओ/इन नाविकों को
इन तूफानी लहरों को/आ कर समझाओ–''[11]

इस पंक्ति में 'नेताओं' कर्ता और 'नाविकों को आ कर समझाओ' में कर्म है जो कि नेता नाविक रूपी जनता को तूफानी लहर, आक्रांत का सहन करने के लिए समझाने का कार्य कर रहा है।

शमशेर की कविताओं में 'करण–परसर्ग 'का प्रयोग हुआ है 'करण' का अर्थ साधना से है। शमशेर ने साधना का प्रयोग किया है कि करण कारक उदाहरण है–

''कोई मेरे कान में धीरे कह रहा है''[12]
''जो हमें प्याार से तक रही है''[13]

इन पंक्तियों में करण कारक के उदाहरण मिलते हैं प्रथम पंक्ति में धीरे से और द्वितीय पंक्ति में 'प्यार से' दोनों पंक्तियों 'से' 'करण–परसर्ग का चिह्न है। प्रथम पंक्ति में कोई व्यक्ति के 'कान में धीरे से' अपनी बात कह रहा है और दूसरे में 'हम से प्यार से' कह रहा है।

इनकी कविताओं में 'सम्प्रदान–परसर्ग' का प्रयोग बहुतायत में हुआ हैं। 'सम्प्रदान' का तात्पर्य है कोई चीज़ या वस्तु दूसरे को प्राप्त होना। ऐसा उल्लेख इनकी मुक्तक छन्द में देखने को मिलता है–

''स्वतंत्र होना है जनतंत्र के सिपाही को!''[14]

इस पंक्ति में 'सिपाही' साधन का कार्य कर रहे हैं जो कि देश को स्वतंत्रता, स्वाधीनता प्राप्त करना चाहते हैं। सम्प्रदान परसर्ग का चिह्न 'को', और 'के लिए' होता हैं।

शमशेर की कविताओं में 'अपादान–परसर्ग' का जीवन्त प्रमाण मिलता है। 'अपादान' का अर्थ है अगल होना। इस तरह के उदाहरण 'सपने रंग' कविता में देखने को मिलते हैं–

''नाविकों की जंग/टामियों से/दम्भ से/साम्राज्य से/
और एक और/लूट–मार/अपने ही धन–जन की।''[15]

नाविक रूपी भारतीय जनता टामियों के साम्राज्य से लूट–मार से अलग हो गया है। इसका आपादान चिह्न 'से' हैं।

शमशेर ने अपने काव्य में 'संबंध–परसर्ग' का प्रयोग किया है, जो क्रिया के अतिरिक्त संज्ञा व सर्वनाम से संबंध रखता है। सम्बंध–परसर्ग का अनूठा प्रयोग इनकी 'बात बोलेगी' कविता संग्रह में मिलता हैं–

''लहू–भरे गवालियर के बजार में जलूस/जल रहा/ गवालियर के मजूर का हृदय।''[16]

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2013

इस पंक्ति में ग्वालियर का बाजार लहू से पूरा भरा है जो ग्वालियर के मजूर का हृदय धारण किया हुआ है। इसमें 'मजूर का हृदय' और 'गवालियार के बाजार' दोनों में संबंध परसर्ग है। संबंध–परसर्ग के चिह्न 'का' की' 'के' 'ना' 'नी' 'रे' आदि है।

शमशेर की कविताओं में भी 'अधिकरण–परसर्ग' का प्रयोग मिलता है। जिसका चिह्न 'में' और 'पर' है। अधिकरण का तात्पर्य 'आधार' से है। इसके प्रमाण इनकी कविताओं में मिलते हैं–

''दूर तक नंगे पहाड़ों पर/घास के मैदान।''**17**

इस पंक्ति से स्पष्ट होता है कि घास के मैदान में जो नंगे दिखाई दे रहे हैं वे 'पहाड़ों' पर हैं।

शमशेर की कविताओं में 'संबोधन–परसर्ग' का अनूठा प्रयोग मिलता है। जिसका प्रयोग 'पुकारने' के अर्थ में किया जाता है। इसका चिह्न 'हे' 'ओ', 'आह', 'अरे' आदि है।

''ओ नौजवान/तू वही कुछ है!''**18**

इस पंक्ति में नौजवान को 'ओ' से संबोधित किया गया है।

शमशेर के काव्य में विभिन्न भाषा–बोली के शब्द प्रयुक्त हुए हैं, जो सुग्राह्य हैं। उनके काव्य में **उर्दू–अरबी और फारसी** के शब्दों का प्रयोग दिखता है, जो इस प्रकार है– दरिया, साफ़, तरफ़, मोहब्बत, ढवाब, ख़ामहख़ाह, नज़र, अफसोस, आग़, गरीब, ज़िंदगी, ग़म, सलामी, दुश्मन, नाज़, दस्तूरे–फ़िरदौसी, निग़ाही, हक़ीकत, उम्र, ग़ज़ल, इशारा, अमल, ज़माना, मज़मून, वर्ना, ख़ामोश, नफरत नश्तरगौत, ऐशो मसर्रत शराबे, अज़ब, इंतज़ार, क़लम, आइना काफिलों सिवाय, दुनिया, बहतर, सफर, ज़िगर, रूह, रफू, ख़ाक, इश्क, शायरा, दिल, मुब्तिला, मज़ाक, आदि बहुतेरे शब्द हैं जिन्हें गिनाया जा सकता है।

शमशेर के काव्य में विजातीय या आगत शब्द भी मिलते हैं। विजातीय शब्दों में विदेशी शब्द प्रमुखतः गण्य हैं। शमशेर ने अंग्रेजी शब्दों का देवनागरी लिपि में और रोमन लिपि में प्रायः प्रयोग किया है। ये शब्द उनकी कविता में ऐसे आये हैं जैसे इनकी ज़रूरत वहां थी ही। यदि उनका पर्यायवाची दूसरा शब्द रख दिया जाय तो कविता बोझिल हो जायेगी। इनके यहां अंग्रेजी शब्द वर्ग का प्रयोग मिलता है–लॉन, ट्रांसफर, कम्यून, बल्ब, मशीन, कम्युनिस्ट, रिलीव, सिनेमा, स्लेट, मॉडल, आर्टिस्ट, इंजिन, बैंक, ग्राउंड, डॉलर, मॉडलिस्ट, लाउडस्पीकर, टिक्, डायलॉग, स्टेज, फोनिमिक्स, लाइट्स, टोन, कम्पाउंड, स्टीम, गवर्नमेंट आदि।

अंग्रेजी (रोमन) शब्द से उनके .....मानसिक भावों का पता चलता है। अंग्रेजी शब्दों में स्वरों और ध्वनियों की विविधता आत्मान्वेषण के क्रम में आरोह–अवरोह के क्षणों को व्यक्त करती है। यह शमशेर की काव्य–भाषा के प्रयोगात्मक, अर्थगामी–परम्परा से अलग नहीं हैं।

शमशेर के काव्य में संस्कृत (तत्सम) शब्द का प्रयोग हुआ है। ये शब्द उनके काव्य के भाषिक प्रवाह में बाधक नहीं बनते, बल्कि अभिव्यक्ति को सरल बनाने का कार्य करते हैं। इनसे कहीं–कहीं भाषिक–सौन्दर्य की सृष्टि भी हुई लगती है। इसके अतिरिक्त ये भाव सम्प्रेषण में अतिरिक्त शक्ति भर देते हैं। इन शब्दों में–लाघा तुच्छति, एक, तमिस्रा, धन्वा, भृकुटि, पाषाण, त्वचा, अनिषिद्ध प्राण, प्रति, हृदय, उन्मुक्त, विचूर्ण, महाबाण, परित्राण, प्रमाण, तृण, प्रस्तर, प्लावन, उष्ण, ताडंव, पत्र, मध्याम, मृत्यु, स्पष्ट, स्पृहणीय, शक्ति, संघर्ष, सृष्टा, राष्ट्र, स्वर्ण, प्रवीण, निर्माण, विज्ञ, अपहरण, निर्णय, आह्वान, मज्जा, मांस,

नेतागण, स्वातन्त्रय पथ, घृण्य, वाणी, प्राचीन, तुच्छ, द्वेष, निमिष, पुण्य, शुभ्र, कर्ण, आदि तत्सम शब्द हैं।

शमशेर ने अपने काव्य में तद्भव शब्दों का प्रयोग सशक्त रूप से किया हैं–धरम, गुपुत, रावन, अपन, पंडत, ठिर, सिंगरे, व्यवहत, सहारा, पत्थर, तीर, सावन, बरसा, घुमडा, मरन, धरती, गवालियार, मजूर, पानी, देस, सपने, भस्म, खतम, उतारती, अटल, सांस, आयु, दोस्त, घरन, प्रान, आदि हैं। ये शब्द खड़ीबोली के समान ही काव्य को कोमल बनाने में सहायक हैं।

शमशेर के काव्य में समास का प्रयोग दिखलाई पडता है। अव्ययीभाव समास में पूर्वपद की प्रधानता होती है और समासिक पद अव्यय होता है। इस समास में समूचा पद क्रियाविशेषण अव्यय हो जाता है, और वही प्रधान होता है। हिन्दी में इन समासों का विग्रह करने में बहुत कठिनाई होती है। ये प्रयोगधर्मी कवि होने के कारण रूप, गुण, क्रिया आदि के समान ही इनके समासों में भी परिवर्तन होता रहता है। अव्ययीभाव समास के मार्मिक दृष्टांत हैं जो शमशेर के काव्य में मिलते हैं– उन्मुक्त, असंख्य, भयविहीन, उत्पादन, उमर, प्रतिध्वनि, पराधीन, निरन्तर, परतीति परिधि और प्रवीन आदि है–

''क्रोध,
उत्तेजन।/विलास–भाव/प्रवास–अपनाव।''[19]

प्रस्तुत उदारण में 'उत्तेजन' 'प्रवास' में अव्ययीभाव समास है। इसका विग्रह इस प्रकार होगा– उत्+तेजन और प्र+वास' इन दोनों में उत् और प्र उपसर्ग है, 'तेजन और 'वास' अव्यय है। उत्तेजन का अर्थ–उत्साह, और रोमांस से भरा हुआ तथा प्रवास का अर्थ दूसरे स्थान पर वास करना अर्थात् दूसरे जगह रखना।

शमशेर के काव्य में 'तत्पुरुष समास' की अत्यन्त सूक्ष्म व्यंजना हुई है। तत्पुरुष समास में अन्तिम पद प्रधान होता है। प्रथम विशेषण और द्वितीय पद विशेष्य होता है द्वितीय पद अर्थात् बाद वाले पद विशेष्य रहने से इस समास में प्रधानता रहती है। इस समास में तीन भेद हैं। तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु समास इसके छः उपभेद हैं उपपद, नञ, प्रादि, अलूक, मध्यम, पदलोपी और मयूरव्यंसकादि। तत्पुरुष समास विभक्तिपरक होता है। इन्हीं विभक्तियों के आधार पर इसको छः भागों में विभाजित किया जाता है। जिसमें कर्ता और संबोधन को छोड़ दिया जाता है। तत्पुरुष समास–कर्म–तत्पुरुष, करण–तत्पुरूष, सम्प्रदान–तत्पुरुष, आपादान–तत्पुरुष और संबंध–तत्पुरुष समास है। शमशेर की कविताओं में तत्पुरुष–समास के दृष्टांत ज्यादा मिलते हैं। 'लोकतन्त्र', 'हीनभाव', 'भारतवासी', 'दिव्यरंग', 'भाषितर', 'रक्तोवर्णो' 'कारागृह', 'गुहान्तर', 'विश्वात्मा' और कुरूक्षेत्र आदि हैं। इन पंक्तियों से तत्पुरुष समास की और पुष्टि हो जायेगी–

''होली का भय, दीवाली का आतंक/ईद, मुहर्रम, एक ही भॉतिऽ
प्रेम के संगी, धर्म के साथी/उंघ गये सब सं–संगाती।''[20]

इस प्रस्तुत छन्द में तत्पुरुष समास के जीवन्त तत्व हैं, होली का भय, दीवाली का आतंक, प्रेम के संगी, और धर्म के साथी आदि। का, के, विभक्ति के द्योतक हैं।

शमशेर की कविताओं में 'कर्मधारय–समास' का प्रयोग कहीं न कहीं देखने को मिलता है। जिस तत्पुरुष–समास के समस्त पद समानाधिकरण हों अर्थात् विशेष्य–विशेषता भाव को प्राप्त हों, कर्ता–करक हों और लिंग वचन समान हों, वहां कर्मधारय–समास होता है। शमशेर की कविता में कर्मधारय–समास के निम्न उदाहरण हैं– महाकवि, महाकाव्य,

महाशक्ति, महाबान, परित्राण, स्वर्ण–रजत, नया–पुराना आदि।

''ये पूरब–पश्चिम मेरी आत्मा के ताने–बने हैं।''[21]

इस प्रस्तुत पद (वाक्य) में पूरब–पश्चिम दोनों पद प्रधान हैं इसीलिए इसमें विशेषणोभयपद है, जो कर्मधारय समास का उदाहरण है।

शमशेर के काव्य में 'द्विगु समास' का वर्णन कम ही हुआ है, अर्थात् यदा–कदा ही मिलता है। द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाचक होता है, इसके अन्तर्गत–समाहार द्विगु और उत्तरपद प्रधान द्विगु हैं। समाहार का अर्थ समूह वाचक होता है जबकि उत्तरपद प्रधान समास बाद वाले पद पर बल दिया जाता है। शमशेर की कविताओं में द्विगु–समास के ये उदाहरण हैं–संतरंगी, तीनों भवन, नवोत्तर, चार दिशाओं, चौकोर, आदि हैं–

''दो पहाड़ियाँ घूम–विनिर्मित, पावन।''[22]

इस प्रस्तुत पंक्ति में 'दो पहाडियां' द्विगु समास को द्योतित करती हैं। 'दो' संख्या है।

शमशेर के काव्य में 'बहुब्रीहि–समास' का प्रयोग नहीं के बराबर हुआ है। इस समास में आए हुए पदों को छोड़कर जब किसी अन्य पदार्थ की प्रधानता हो, तब उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं। इस समास के समासगत पदों में कोई भी प्रधान नहीं होता, बल्कि पूरा समस्तपद ही किसी अन्य पद का विशेषण होता है। बहुब्रीहि समास में समानाधिकरण–बहुब्रीहि, व्यधिकरण–बहुब्रीहि तुल्ययोग–बहुब्रीहि या सहबहुब्रीहि और व्यतिहारबहुब्रीह आदि हैं। शमशेर की कविता से यह 'बहुब्रीहि–समास' का उदाहरण प्रस्तुत है।

''प्राणाहुतियों से युग–युग की/चिर अजेय बलदाता।
अखिल राष्ट्र का श्रम, संयम, तपः/कर्मजयी, युग ताता।''[23]

प्रस्तुत दृष्टांत में 'प्राणाहुतियों' 'बलदाता', और 'कर्मजयी' में बहुब्रीहि समास है। इसका विग्रह इस प्रकार किया जा सकता है–प्राण है आहुति जिसको, बल है दाता जिसको और कर्म है जय जिसकी। इस प्रस्तुत दृष्टांत में बहुब्रीहि–समास के समानाधिकरण बहुब्रीहि, समास का दृष्टांत है।

शमशेर के कविताओं में द्वन्द्व समास का अति सूक्ष्म एवं अत्यंत जटिल प्रयोग कहीं–कहीं मिलता है। द्वन्द्व समास में सभी पद प्रधान होते हैं। द्वन्द्व और तत्पुरुष से बने पदों का लिंग अन्तिम शब्द के अनुसार होता है। द्वन्द्व समास के तीन भेद होते हैं–इतरेतर–द्वन्द्व समाहार–द्वन्द्व और वैकल्पिक–द्वन्द। द्वन्द्व–समास में प्रयुक्त इतरेतर द्वन्द्व समाहार–द्वन्द्व और वैकल्पिक–द्वन्द्व, शमशेर की कविताओं में मिलता है। जिसकी आलोचकों ने अपने ढंग से आलोचना की है–

''बैंगनी–सन्दली, भरे/ सूर्मयी–सिन्दूरी/ धुले–सांवले, पीले–गुलाबी से उदे–काही/ नीले–गहरे–से मटैले''[24]

प्रस्तुत छन्द में 'बैंगनी–संदली'/ 'सूर्मयी–सिन्दूरी/ धूले–सांवले, पीले–गुलाबी उदे–काही, नीले–मटैले में विकल्प द्वन्द्व समास है।

निष्कर्ष

इन मुक़म्मल तथ्यों के आधार पर कहा जाता सकता है कि शमशेर ने बोली के क्षेत्र में दख़ल दिया है। ये रूप–व्यवस्था की व्याकरणिक कोटियों का प्रयोग करके भाषा को सरल व सहज बनाते हैं–जिसमें अव्यय, प्रत्यय, उपसर्ग और परसर्ग इत्यादि हैं। शमशेर ने शब्दों का प्रयोग करके भाषिक–संघटना में वैविध्यता ला दी है। जिससे भाषा का माधुर्य बढ़ गया है। ये शब्द गढ़ने में अपने समकालीन कवियों में अग्रणी हैं। शब्द वर्ग ने कविता में मौलिकता और निखार ला दिया है। ये प्रयोगधर्मी कवि हैं जो

अपने समकालीन कवियों से इस बात में भिन्न हैं कि वे व्याकरण के काफी नज़दीक हैं। इनकी कविता भावाभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध हुई है। ये भाषा को परमार्जित, परिष्कृत, माधुर्य, कोमल व प्रांजल बनते हैं।

संदर्भ सूची

1. 'बात बोलेगी' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–13
2. वही, पृ.–33
3. वही, पृ.–49
4. 'उदिता' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–74
5. वही, पृ.–81
6. 'बात बोलेगी' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–22
7. वही, पृ.–33
8. 'उदिता' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–87
9. वही,पृ.–100
10. 'बात बोलेगी' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–61
11. वही, पृ.–39
12. 'वही, पृ.–123
13. वही, पृ.–123
14. वही, पृ.–63
15. वही, पृ.–38
16. वही, पृ.–27
17. वही,पृ.–29
18. वही,पृ.–69
19. वही, पृ.–35
20. 'चुका भी हूँ नहीं मैं' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ. –28
21. 'बात बोलेगी' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–77
22. 'उदिता' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–79
23. 'बात बोलेगी' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–17
24. 'उदिता' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–68